*International Journal of Academic Excellence and Research (IJAER)*
**e-ISSN: 3107-3913 || Publication Impact Factor (I2OR) : 2.015**
***Vol. 02, No. 01, January-March, 2026, pp 135-141***
*© Copyright by MGM Publishing House (MGMPH)*
*www.mgmpublications.com*

# उदयपुर जिले के ग्रामीण जीवन स्तर पर पर्यटन विकास का प्रभावः एक भौगोलिक विश्लेषण

**डॉ. पूजा व्यास***
सहायक आचार्य, लार्ड बुद्धा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस कॉलेज, रानपुर, कोटा
***Corresponding author:** poojasharma60705@gmail.com

*Citation: पूजा व्यास (2026). उदयपुर जिले के ग्रामीण जीवन स्तर पर पर्यटन विकास का प्रभावः एक भौगोलिक विश्लेषण. International Journal of Academic Excellence and Research, 02(01), 135–141.*

***सारः*** *उदयपुर जिले के भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियाँ, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएँ राजस्थान के पर्यटन विकास में अपनी अहम भूमिका बयान करती है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्र अपनी लोक कलाओं, लोक नृत्य और हस्तशिल्प के लिए विश्व विख्यात है। यहाँ की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत और खुला हुआ प्राकृतिक वातावरण, सुंदर दूर–दूर तक फैली पहाड़ियाँ, राजस्थान के अन्य क्षेत्रों से सबसे पहले पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि राजस्थान में पर्यटकों की संख्या 84% प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है। जिसमें उदयपुर जिले का स्थान सर्वोपरि है। आगामी पंचवर्षीय योजना में विश्व पर्यटन की दृष्टि नवीनतम सुविधाओं एवं स्थानीय आकर्षण के कारण भारतीय पर्यटन में लगभग 10% वृद्धि होने की आशा है जिसमें राजस्थान का मुख्य योगदान रहेगा। ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए सबसे जरूरी ग्रामीणों के बीच जागरूकता को बढ़ाना वह देश–विदेश में ग्रामीण पर्यटन की कुशल विपणन रणनीति तैयार करना है। इसके आलेखित गाँव में स्थानीय आधारभूत, भौतिक व तकनीकी सुविधाओं को बढ़ाकर ग्रामीण जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव डाला जा सकता है। इस समीक्षा पत्र का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि पर्यटन विकास ने उदयपुर जिले के साथ–साथ संपूर्ण राजस्थान के ग्रामीण विकास में किस प्रकार योगदान दिया है। इस अध्ययन में विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है जैसे पर्यटन के द्वारा ग्रामीण रोजगार के अवसरों का सृजन, स्थानीय व्यवसायों का विकास और बुनियादी ढांचे में सुधार। पर्यटन राजस्थान के विभिन्न ग्रामीण की पारंपरिक कला, संस्कृति और इतिहास को संरक्षित और प्रसारित करने का एक प्रभावी तरीका भी है। पर्यटन विकास न केवल सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में सहायक है बल्कि यह जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में विकास और समृद्धि का स्रोत भी बना है।*

**Article History:**
**Received:** 15 February, 2026
**Revised:** 05 March, 2026
**Accepted:** 10 March, 2026
**Published Online:** 17 March, 2026

***शब्दकोशः***
*ग्रामीण जीवन, पर्यटन विकास, भौगोलिक विश्लेषण, प्राकृतिक वातावरण, ग्रामीण रोजगार।*

## प्रस्तावना

पर्यटन दो शब्दों से मिलकर बना है। पेरी एवं अटन। पर्यटन का अर्थ है घूमना–फिरना, मौज–मस्ती करना, भ्रमण पर जाना, तीर्थयात्रा, हवा बदलना आदि।

## पर्यटक

यात्रा करने वाले व्यक्ति को कहा जाता है। सार्वभौम शब्द के अनुसार पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए आनन्द प्राप्ति हेतु यात्रा करता है। विश्व पर्यटन संगठन (W.T.O.) "एक

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by MGM Publishing House. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

पर्यटक को एक अल्पकालिक आगन्तुक के रूप में परिभाषित करता है जिसका उस स्थान पर कम से कम घंटे का प्रवास होता है और उसकी यात्रा का उद्देश्य अपने खाली समय के दौरान होता है। आनन्द, अवकाश, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक गतिविधियों और खेलकूद या सम्मेलनों आदि में भागीदारी में से कोई भी हो सकता है। भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा से स्पष्ट किया है कि कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक व सामाजिक लाभ पहुँचता हो, साथ ही पर्यटकों व स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की संभावना हो तो उसे **"ग्रामीण पर्यटन"** कहा जा सकता है।

- 2014 में भारत सरकार ने "स्वदेश दर्शन" नामक योजना में 13 विषय आधारित सर्किटों में ग्रामीण सर्किट को भी महत्व दिया है।
- राजस्थान की लगभग 75.13% जनसंख्या राजस्थान के 44,795 गाँवों में निवास करती है।

हर गाँव की अपनी विशेषता होती है। महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत गाँवों में ही बसता है। भारत का ग्रामीण जीवन असली भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है। हमारे गाँव देश की संस्कृति व परम्पराओं का खजाना है। ग्रामीण पर्यटन में पर्यटक गाँव के जीवन को समझने और उसका प्रत्यक्ष आनन्द लेने के उद्देश्य से गाँवों में जाकर भ्रमण एवं निवास करते हैं। वहाँ के त्यौहार, उत्सव, रीति–रिवाजों, खान–पान, पहनावा, आदि में सक्रिय होकर भागीदारी निभाते हैं। ग्रामीण पर्यटन से रोजगार मिलता है और प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षण के साथ तुप्त होती जा रही ग्रामीण कलाओं, विधाओं की सुरक्षा भी की जा सकती है।

## साहित्य समीक्षा

पर्यटन की दृष्टि से उदयपुर जिले के महत्वपूर्ण स्थलों का कायाकल्प किया जा रहा है जबकि कुछ नए स्थानों का भी विकास किया जा रहा है। शहर से लगभग 24 किमी दूर स्थित **"बाघदरा नेचर पार्क"** अब प्रकृति प्रेमियों के लिए एक बड़ा आकर्षण होगा। पर्यटकों के ठहरने को और बेहतर बनाने हेतु जिपलाइन, जिगजैग, एडवेंचर स्पोर्ट्स और कैफेटेरिया जैसी अतिरिक्त सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। शहर के लगभग 10 किमी दूर बड़ी नदी के किनारे स्थित **इकोटोन पार्क** को पर्यटकों को वन्यजीवों के नजदीकी दर्शन और रात में टेंट में ठहरने की सुविधा प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है। लगभग 400 हैक्टेयर क्षेत्र में फैले गाँव पहाड़ी क्षेत्रों को भी यू.आई.टी. द्वारा एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। चित्तौड़गढ़ जाने वाली सड़क पर स्थित सेगुरा पहाड़ी, बेदवास को भी एक इको–पार्क के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ चित्रकारी को बढ़ावा किया। साथ ही पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पौधे व लताऐं लगाई गई है जो उसकी सुन्दरता को बढ़ावा दे रही है। उदयपुर जिले में ग्रामीण पर्यटन और इको–टूरिज्म के विकास से झाडोल, मेनार और कुराबड़ जैसे ग्रामीण क्षेत्रों का तेजी से कायाकल्प हुआ है। यहाँ आदिवासी संस्कृति, जैविक खेती, होमस्टे, और प्राकृतिक स्थलों के कारण देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ी है, जिससे स्थानीय रोजगार व बुनियादी ढाँचे का विकास हुआ है।

## उदयपुर के प्रमुख विकसित ग्रामीण/अर्द्ध–ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र

- **झाड़ोल**– ग्रामीण पर्यटन हेतु विशेष झोपड़ियाँ व जैविक भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा है।
- **मेनार** – बर्ड विलेज के रूप में प्रसिद्ध यहाँ शिव की प्रतिमा भी आकर्षण का केन्द्र है।
- **जयसमंद** – एशिया की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील के पास का ग्रामीण क्षेत्र।
- **नांदेश्वर जी** – उदयपुर से 11 किमी दूर आगे रोड पर स्थित एक लोकप्रिय ग्रामीण पर्यटन स्थल है।
- **कुराबड़**– मेरू जी मन्दिर और बेमलेश्वर महादेव के कारण प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त ग्रामीण क्षेत्र अब केवल कृषि पर निर्भर न रहकर पर्यटन के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं एवं राज्य के आर्थिक विकास को बढ़ा रहे हैं। राज्य सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं बनाई हैं। इनका उद्देश्य न केवल राज्य के पर्यटन को बढ़ावा देना है बल्कि राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना भी है और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। इसी के साथ पर्यटन क्षेत्र के सतत् विकास को सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में भी कार्य किए गए हैं।

जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों के आने से स्थानीय कार्यक्रम और छोटे व्यापारियों को फायदा हुआ है। इसके अलावा होटल, रेस्टोरेंट, ट्रांसपोर्ट और गाइड जैसे क्षेत्र में रोजगार के नए मौके उत्पन्न हो गए हैं।

## पर्यटन और ग्रामीण विकास

पर्यटन और ग्रामीण विकास दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ग्रामीण पर्यटन जिससे गांव की संस्कृति, विरासत और प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ावा मिलता है। यह रोजगार के नए अवसर पैदा करता है। महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाता है और पलायन को कम करने के साथ–साथ पारंपरिक कला और संस्कृति का संरक्षण करता है।

## पर्यटन और आर्थिक विकास

राजस्थान के प्रत्येक जिले में गांव–गांव तक पर्यटकों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने परिवहन, आवास और अन्य सुविधाओं के निर्माण में भारी निवेश किया है। प्रमुख शहरों और पर्यटन स्थलों तक पहुंचाने के लिए सड़क, रेल–मार्ग और हवाई सेवाएं बेहतर हुई हैं।

वर्तमान में राज्य के प्रमुख पर्यटन केन्द्रो जैसे उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर में विभिन्न आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं जो इन स्थानों को और भी आकर्षक बनाती है।

**(कुमारी सुमन और खान साहिब 2023)** इस बुनियादी ढांचे के विकास से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ हुआ है क्योंकि इससे व्यापार व खुदरा क्षेत्र में विकास हुआ है। इसके अतिरिक्त सड़कों व परिवहन सुविधाओं के सुधार से जिले में अन्य उद्योगों को भी लाभ हुआ है।

## ग्रामीण पर्यटक के प्रमुख प्रकार

- **कृषि पर्यटनः** इसमें पर्यटक किसानों द्वारा फसल उगाने से पैकिंग तक की प्रक्रिया को खेतों में रूककर नजदीक से महसूस करता है।
- **संस्कृति पर्यटनः** पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति, त्यौहार, वेशभूषा, –भाषा, लोकगीत एवं लोक नृत्य में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान करना।
- **प्रकृति पर्यटनः** शहरों की भीड़ भरी जिंदगी से निजात पाने हेतु कुछ दिनों के लिए एकांत की तलाश में लोगों को गांव की शांति और प्राकृतिक वातावरण वाले स्थान आकर्षित करते हैं। वह स्वास्थ्य लाभ हेतु गांव में आते हैं।
- **साहसिक पर्यटनः** पर्यटक जिंदगी में रोमांस का अनुभव प्राप्त करने गांव में आते हैं ट्रैकिंग पैराग्लाइडिंग आदि।
- **नृजातीय पर्यटनः** इसका उद्देश्य संस्कृतियों की जीवन शैलियों व रीति रिवाज एवं विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।
- **आर्थिक पर्यटनः** स्थानीय कलाकारों द्वारा निर्मित हस्तकला, चित्रकारी और स्थापत्य कला से जुड़ी हुई वस्तुओं को खरीदने गांव आते हैं।
- समुदाय आधारित एक पर्यटन के संरक्षण हेतु।
- **धार्मिक पर्यटनः** प्रसिद्ध स्थानीय देवी देवताओं में अपनी धार्मिक आस्थाओं के कारण पर्यटक गांव में आते हैं।

**उद्देश्य**

- उदयपुर जिले में पर्यटन के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन आर्थिक विकास के मूल्यांकन के आधार पर किया गया।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में पर्यटन विकास की विशेषताओं जैसे रोजगार सृजन आधारभूत संरचना में सुधार स्थानीय ग्रामीण विकास व श्रमिक सांस्कृतिक प्रभाव जैसी विशेषताओं को स्पष्ट किया गया।
- उदयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के महत्व को समझाया गया है।
- उदयपुर जिले के पर्यावरणीय संरक्षण पर प्रभाव डाला गया है।

**तालिका 1: पर्यटन स्थलों की भौतिक प्रगति**

| वर्ष | योजना का नाम<br>पर्यटक स्थलों का विकास / संरक्षण | मेले, त्यौहार एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ |
|---|---|---|
| 2014–15 | 07 | 50 |
| 2015–16 | 12 | 65 |
| 2016–17 | 12 | 58 |
| 2017–18 | 24 | 67 |
| 2018–19 | 28 | 56 |
| 2019–20 | 19 | 67 |
| 2020–21 (दिसम्बर अंत तक) | कोविड–19 के कारण कोई नवीन विकास कार्य नहीं हुए। | 03 |

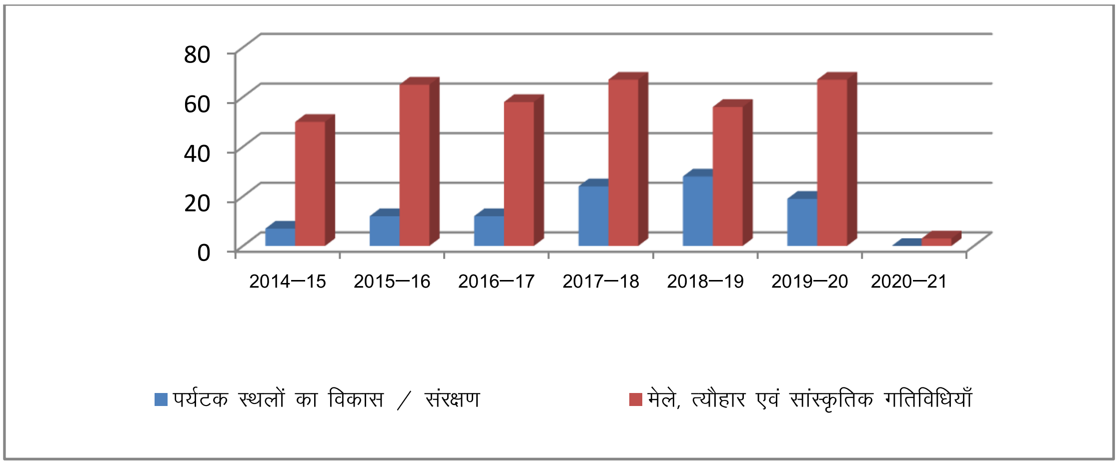


स्त्रोतः– वार्षिक प्रगति रिपोर्ट (2014–21) पर्यटन विकास राजस्थान सरकार

**परिकल्पना**

- राजस्थान के उदयपुर जिले के ग्रामीण स्तरों पर पर्यटन क्षेत्र में आकर्षण निरंतर बढ़ता जा रहा है।
- सरकार द्वारा जिले के पर्यटन के विकास एवं संरक्षण हेतु प्रयास किया जा रहे हैं।
- जिले में पर्यटन विकास में ग्रामीणों हेतु रोजगार के अवसरों में वृद्धि बढ़ती जा रही है।

**अध्ययन विधि**

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह व्यक्तिगत संपर्क, प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन, डायरी, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार–पत्र, पर्यटन विभाग राजस्थान एवं विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से किया गया है।

## उदयपुर के प्रमुख पर्यटन क्षेत्र

राजस्थान का वो शहर है जिसे **"झीलों का शहर"** कहा जाता है। अरावली पहाड़ियों से घिरा यह शहर प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है। वास्तुकला, भित्तीचित्र, घाटियाँ, झरने, पहाड़ियाँ आदि का सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित किए बिना नहीं रह सकता है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में भी वास्तुकला, संस्कृति, रीति–रिवाज, खानपान, पहनावा आदि के अनूठे नमूने देखने को मिलते हैं।

## पर्यटन विकास निगम

इसकी स्थापना 1978 में हुई। इसका मुख्यालय जयपुर में है। इसके निम्न कार्य हैं।

- राजस्थान में पर्यटन विकास हेतु कार्यक्रम नीतियों व योजनाएं तैयार करना ।
- पर्यटन स्थल का रखरखाव करना।
- पर्यटकों को आकर्षित करते हुए मेले व महोत्सव को आयोजित करना।
- पर्यटकों की सुविधा हेतु होटल पर्यटन एवं पुलिस की व्यवस्था करना।

**तालिका 2: उदयपुर जिले के पर्यटन विकास का ग्रामीण जीवन स्तर पर प्रभावः भौगोलिक विश्लेषण के संदर्भ में पिछले 5 वर्षों के आंकड़ों पर आधारित निम्न बिन्दुओं की प्रस्तुति की जा रही हैं–**

| वर्ष | पर्यटकों की संख्या (लाख में) | रोजगार के अवसर | स्थानीय व्यवसायों की आय |
|---|---|---|---|
| 2018 | 12 | 15000 | रू 60 करोड़ |
| 2019 | 14 | 18000 | रू 75करोड़ |
| 2020 | 9 (कोविड–19 बीमारी) | 12000 | रू 50 करोड़ |
| 2021 | 10 | 13500 | रू 55करोड़ |
| 2022 | 18 | 25000 | रू 100 करोड़ |
| 2023 | 20 | 50000 | रू 120 करोड़ |

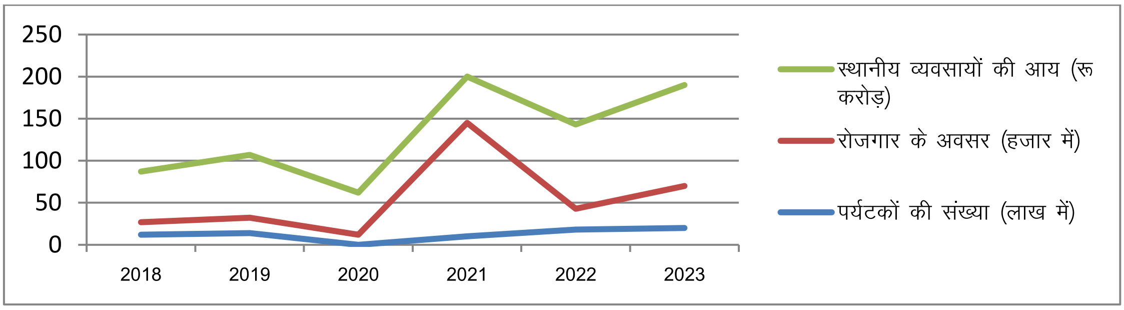


स्त्रोतः–वार्षिक प्रगति रिपोर्ट (2018–23) पर्यटन विकास राजस्थान सरकार

अर्थात उदयपुर जिले के पर्यटन विकास में पिछले 5 वर्षों में ग्रामीण स्तर में उल्लेख आदि सुधारों को प्रेरित किया है। पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभ, रोजगार के अवसर और आधारभूत संरचना में सुधारने ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाया है। यदि यह विकास स्थायी एवं समावेशी बना रहता है। भविष्य में ग्रामीण जीवन स्तर में और सुधार की संभावना है।

## पर्यटन नीति

जून 2011 में सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने और युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए **"पधारो"** योजना शुरू की। राजस्थान में 2015 में अपनी नई पर्यटन नीति घोषणा की गई थी। राजस्थान का दूसरा रोपवे उदयपुर में करणी माता मंदिर पर 8 जून 2008 से संचालित है। उदयपुर को भारत का सर्वश्रेष्ठ अवकाश स्थल के रूप में चुना गया है।

## शोध के मुख्य परिणाम

- **आर्थिक सशक्तिकरणः** ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि हुई है। विशेष कर आदिवासी समुदायों को वैकल्पिक रोजगार मिल रहा है। मेनार जैसे गांव जो अपनी जैविक खेती और जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है, ने पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की है।
- **बेहतर कनेक्टिविटीः**— पर्यटन के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी इंटरनेट की सुविधा और बुनियादी ढांचे का विकास हुआ है।
- **कला और जीवनशैलीः**— यह स्थानीय परंपराओं लोक कलाओं और जीवनशैलियों को उजागर कर उन्हें पुनर्जीवित कर रहा है, जिससे वह विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रहा है।
- **पर्यावरणीय चुनौतियाँ (अरावली क्षेत्र) —** अनियंत्रित पर्यटन, अधिक होटल निर्माण व पहाड़ियों पर अतिक्रमण के कारण अरावली की स्थिति पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।
- **व्यवसायीकरणः**— सामाजिक—सांस्कृतिक परिवर्तन ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसायीकरण और शहरी संस्कृति के समावेश से स्थानीय व ग्रामीण जीवन शैली में बदलाव आ रहा है।

**तालिका 3ः पर्यटन स्थलों के विकास एवं संरक्षण हेतु व्यय की गई राशि**

**(2018—19 से 2023—24 तक)**

| वर्ष | बजट प्रावधान (रू लाख में) | संशोधित अनुमान (रू लाख में) | व्यय (रू लाख में) |
|---|---|---|---|
| 2018—19 | 6150.46 | 2856.19 | 2168.36 |
| 2019—20 | 4805.39 | 1668.30 | 800.19 |
| 2020—21 | 4501.47 | 2137.26 | 1254.33 |
| 2021—22 | 18451.26 | 3207.29 | 1694.29 |
| 2022—23 | 6680.01 | 4606.18 | 2204.39 |
| 2023—24 | 4266.52 | — | 432.75 |

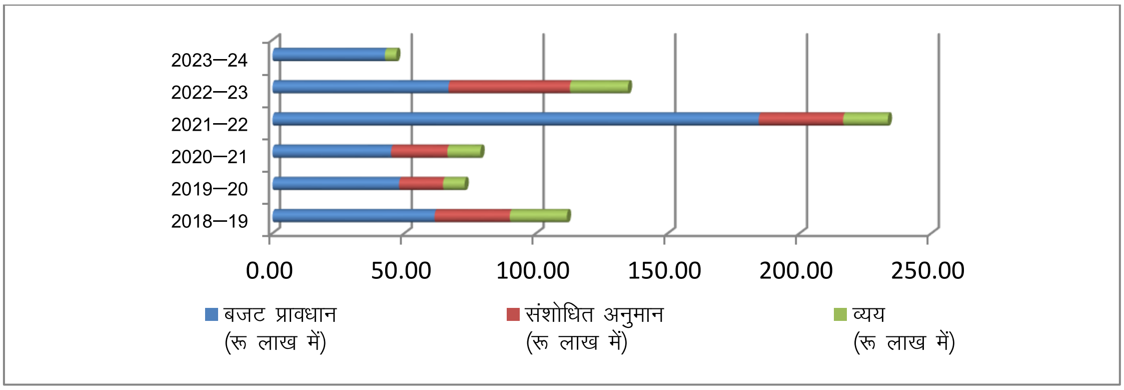


स्त्रोतः—वार्षिक प्रगति रिपोर्ट (2023—24) पर्यटन विकास राजस्थान सरकार

## सुझाव

- **बुनियादी ढांचे का विकास—** ग्रामीण सड़कों एवं परिवहन सेवाओं की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाए।
- स्थानीय संस्कृति (हस्तशिल्प, बाजार, मेले) तथा परंपराओं का उत्थान किया जाए।
- स्थानीय समुदाय के लोगों की इसमें भागीदारी सुनिश्चित करें ताकि उन्हें विकास से लाभ मिल सके।

- पर्यावरणीय संवेदनशीलता का ध्यान रखा जाए।
- इको टूरिज्म का प्रचार किया जाए।
- स्थानीय खाद्य सामग्री को बढ़ावा दिया जाए, जिसमें ग्रामीण खाद्य संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए।
- अनुसंधान व आंकड़ों के संग्रह से यह पता लगाया जाए कि क्या–क्या काम किया जा चुका है और क्या नहीं।
- सरकारी योजनाओं और प्राथमिकताओं के परावर्तन हेतु सरकार से समर्थन प्राप्त करने के लिए ग्रामीण पर्यटन विकास व विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाने को प्राथमिकता दी जाए।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट है कि उदयपुर जिला पर्यटन विकास की दृष्टि से प्रमुख स्थान रखता है जो कि ग्रामीणों के जीवन स्तर में परिवर्तन ला रहा है। विश्लेषण इस बात की पुष्टि करता है कि राजस्थान की विरासत सांस्कृतिक रेगिस्तान और पारिस्थितिकी पर्यटन राज्य में पर्यटन के प्राथमिक प्रेरक है। इसमें उदयपुर के शहरी और ग्रामीण दोनों की अहम भूमिका रही है। यहाँ की समृद्धि सांस्कृतिक विरासत प्रगति के सानिध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। राजस्थान के गांव हमेशा से अपनी लोककलाओं, लोक नृत्य, लोकगीत, मेले, त्यौहार, किले, बावड़ियों, हवेलियों एवं रेत के टीलों के साथ हस्तशिल्प चित्रकारी एवं स्थापत्य कला के लिए विख्यात रहे हैं। उदयपुर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र दोनों की अहम भूमिका रही है। यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्रकृति के सानिध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। इन्हीं कारणों से राजस्थान के उदयपुर जिले के ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्र बना देते हैं।

ग्रामीण पर्यटन से जहां एक ओर ग्रामीण युवकों के लिए रोजगार का माध्यम बनेगा वहीं दूसरी ओर विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और ग्रामीण जीवन शैली के लोगों को एक दूसरे के करीब लाकर हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा। गांव को सुरक्षित और आनंदमयी पर्यटन स्थल में परिवर्तित करने के लिए वहां के स्थानीय समुदायों की भागीदारी एवं सरकार एन.जी.ओ., पंचायत, सामुदायिक संगठन व पीपीपी भागीदारी सभी को साथ मिलकर काम करना होगा। राजस्थान सरकार प्रत्येक जिले में इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। जिससे पर्यटन विकास का ग्रामीण जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ रहा है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, एच.एस., राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
2. राजस्थान पर्यटन विभाग– वार्षिक पर्यटन रिपोर्ट 2010, जयपुर, राजस्थान सरकार।
3. शर्मा, बी और राठौर के (2010) राजस्थान में इको–टूरिज्म और वन्यजीव प्रबन्धन। पर्यावरण पर्यटन जर्नल 9 (3) 78– 911।
4. मेहता, सारा और भाटी आर. (2011) राजस्थान में पर्यटन के सामाजिक, आर्थिक प्रभाव, जर्नल और रूरल डवलपमेन्ट 36(2), 98–1121।
5. यू एन डब्ल्यू टी ओ (2009) एशिया में पर्यटन और सतत् विकास, संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन।
6. व्यास, राजेश कुमार (2004) राजस्थान में पर्यटन प्रबन्धन, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
7. वर्मा, रश्मि (2017) भारत में ग्रामीण पर्यटन में संभावनाएँ, कुरूक्षेत्र वर्ष 64 अंक 2 दिसम्बर पृष्ठ संख्या 56।
8. प्रगति प्रतिवेदन (2015–16) पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार।
9. www.tourism.rajasthan.gov.in
10. www.tourism.gov.in

❑❑❑